सत्गुरु महिमा

(उत्तरकांड में गरुड़ – काकभुशुंडि संवाद)
सत्संदेश, नवंबर 1962 में प्रकाशित

जिस नज़र से सन्त – महात्मा दुनिया को देखते हैं वह नज़र कोई और है। उनकी आत्मा मन – इन्द्रियों से आज़ाद होकर अपने आपको जान चुकी है और अपने आप को जान कर प्रभु में अभेद हो चुकी है। वे **mouthpiece of God** (गुरमुख) बन गये।

जैसी मैं आवै खसम की वाणी, तैसड़ा करि ज्ञानु वे लालो।

कि जैसा मुझे मालिक अन्तर से कहाता है मैं कहता हूँ, मैं अपने आप कुछ नहीं कह रहा।

गुफतए ओ गुफतए अल्लाह बवद
गरचे अज हल्कूमे अब्दुल्लाह बवद

उनका कहा हुआ प्रभु का कहा हुआ होता है, गो (चाहे) ज़ाहिरा शक्ल में वह इन्सानी गले से आवाज़ निकलती मालूम होती है। तो ऐसे पुरुष कहते हैं, ऐ इन्सान! तू भूल में जा रहा है, तू गलफत में सो रहा है।

माया मोहि सभो जगु सोइया, इहु भरमु कहो किउ जाई।।

दुनिया सारी सो रही है, भूल में जा रही है। माया कहते हैं भूल को। वह भूल क्या है?

एहु सरीरु मूल है माया।।

जिस्म से शुरू होती है। हम आत्मा देहधारी हैं, जिस्म का रूप बन

गये। यही बड़ी भारी भूल है। आत्मा देहधारी बनने पर हम आत्मा के **level** (स्तर) से दुनिया को देखेंगे न। मगर हम जिस्म का रूप बन गये, जिस्म के लैवल से दुनिया को देख रहे हैं। चीज़ है कुछ और, नज़र कुछ और आ रही है। सारे वेद-शास्त्र कहते हैं कि जगत असत्य है, आत्मा सत्य है। असत्य से मुराद है बदलने वाला, एकरस न रहने वाला। मगर हमें क्या मालूम होता है? कि जगत सत्य है। यह जिस्म और जगत सारा ही **matter** का (भौतिक तत्त्वों का, माद्दे का) बना हुआ है। **Matter is changing** (माद्दा बदल रहा है) हर लम्हा लम्हा (प्रति पल) मगर क्योंकि हमारी आत्मा मन-इन्द्रियों के घाट पर जिस्म का रूप बनी बैठी है, इतनी इसके साथ **identify** (लंपट) हो चुकी है कि यह अपने आपको, गो (यद्यपि) है आत्मा देहधारी, देह ही समझ रही है। यही भूल है और फिर देह के लैवल से सारी दुनिया को देख रहा है। पहले भूल किस बात से शुरू होती है? कि यह जगत, यह जिस्म हमें सत्य भासता है। गो (चाहे) हम देखते हैं कि ऐसे ही जिस्म हमने कई बार अपने कंधों पर उठाये हैं, श्मशान भूमि में पहुँचा कर अपने हाथों से दाग (जला) दिये हैं मगर फिर भी हमें यकीन नहीं आता कि यह जिस्म छोड़ना है। समझे? यही भूल है।

देखते हैं आँखों से, कंधों पर उठा कर हाथों से दाग भी देते हैं ऐसे ही जिस्मों को, मगर हमें यकीन नहीं होता कि मैं जिस्म हूँ या आत्मा हूँ। बड़ी भारी भूल यहीं से शुरू होती है। इस लिए क्योंकि जिस्म बदल रहा है, सारे जगत के ज़र्रे-ज़र्रे (कण-कण) बदल रहे हैं। इसलिए जब दोनों चीज़ें एक ही रफ्तार से बदल रही हों तो यही मालूम होता है कि ये खड़ी हैं, हालाँकि वे बदल रही हैं। अब इस भूल से जो निकल चुके हैं, वे देखते हैं कि सब आत्मा देहधारी हैं, आत्मा की ज़ात (जाति) वही है जो परमात्मा की ज़ात है। कुछ दिनों के लिए यह जिस्म हमको, मनुष्य

जीवन का, भाग्य से मिला है। इसमें हमने जागना था। हम अन्तर से सो रहे थे बाहर फैलाव के कारण। तो महापुरुष जो जाग उठे हैं, वे कहते हैं, अरे भाइयो! तुम सो रहे हो। समझे? आत्मा मन के अधीन है, मन आगे इन्द्रियों के अधीन है, इन्द्रियों को आगे भोग खैंच रहे हैं। यह बाहर का रूप बना बैठा है, अन्तर से बेशुद और बेखबर है, यही रोना है। जब-जब महापुरुष आते हैं तो कहते हैं अरे भाइयो! तुम जागो। यही वेद भगवान ने कहा, **Awake, arise and stop not till the goal is reached.** जागो, खड़े हो जाओ और उस वक्त तक न ठहरो जब तक तुम मंज़िल पर न पहुँच जाओ। यही कबीर साहब ने कहा—

जाग प्यारी अब काहे सोवै, रैन गई दिवस काहे को खोवै।।

कि ऐ सुरत! ऐ रूह! तू जाग। अब मनुष्य जीवन का दिन चढ़ा है, यह तेरे जागने का वक्त है, तू अब भी सो रही है? जागेगी कब? तो यह है नज़रिया (दृष्टिकोण) उन पुरुषों का जो जाग उठे हैं। वे देखते हैं हमारे सब भाई सो रहे हैं। इसलिए जगह-जगह पर इस बात पर ज़ोर दिया कि—

जागि लेहु रे मना जागि लेहु, काहे गाफिल सोया।।

अरे भाई! तू ग़फलत में क्यों जा रहा है? आखिर जिस्म को छोड़ना तो पड़ेगा। इसका नाम, छोड़ने का नाम है, इन्तकाल करना, मुन्तकिल होना, मरना। यह कोई हव्वा नहीं, एक तबदीली का नाम है, **physical plane** से ऊपर आ जाना। अगर अभी हम ऊपर आना सीख जायें, जिस्म से **analyse** (अपने आपको अलग) कर सकें, जिस्म-जिस्मानियत से ऊपर आ सकें, यह देखने वाली नज़र दुनिया की बदल जायेगी। तो ऐसे महापुरुष कहते हैं कि भाइयो! जागो। जागते

पुरुषों की बड़ी भारी आवश्यकता है क्योंकि हम सब मन-इन्द्रियों के घाट पर जिस्म का रूप बने बैठे हैं। वह जागता पुरुष एक ऐसी हस्ती है जिसने अपनी आत्मा को जिस्म से अलग कर अपने आपको जाना है, प्रभु अनुभव को पा रहा है। जो जागा है, वही तुम को जगा सकेगा न। आलिम भी मन-इन्द्रियों के घाट पर अन्तर से सो रहे हैं बाहर फैलाव के कारण, ग्रन्थाकार भी, चातुर भी। अमीर और गरीब सब एक ही भूल में जा रहे हैं। जो जाग उठता है पुरुष, वह कहता है अरे भाई, मैं भी तुम्हारी तरह इन्सान हूँ । तुम भूल में जा रहे हो, आखिर जिस्म छोड़ना पड़ेगा। जीते-जी इससे ऊपर आना सीखो। तो ऐसे पुरुष की अति आवश्यकता है। वे (जागते पुरुष) क्या समझाते हैं? वे कहते हैं, हम तुम्हारी तरह इन्सान हैं मगर अपनी आत्मा को मन-इन्द्रियों से ऊपर लाकर अपने आपका अनुभव कर रहे हैं, प्रभु-अनुभव को पा रहे हैं। तुम भी जागो, मनुष्य जीवन ही एक जागने का वक्त है। अगर इसमें हम जाग उठे, हमारी आत्मा मन-इन्द्रियों से ऊपर आना सीख गई, जहाँ मर कर जाना है, अभी जीते-जी वहाँ जाना सीख गये तो मौत का खौफ (डर) न रहा। मौत में क्या होता है? जिस्म को आत्मा छोड़ती है। अब जीते-जी जिस्म छोड़ना सीख जाएँ तो मौत के भय से आज़ाद हो जाएँगे न। इसी लिए महापुरुषों ने कहा, **Learn to die so that you may begin to live,** जीते-जी मरना सीखो ताकि तुम हमेशा की ज़िन्दगी को पा जाओ। मौलाना रूम ने कहा—

बमीर ऐ दोस्त पेश अज़ मर्ग, अगर मी ज़िन्दगी खाही।

ऐ दोस्त! अगर तू हमेशा की ज़िन्दगी चाहता है तो मरने से पहले मरना सीख। यही सब महापुरुष कहते हैं—

नानक जीवतिआ मरि रहीऐ ऐसा जोगु कमाईए।।

और,

दादू पहले मर रहो पाछे मरे सब कोय।

तो जीते-जी अगर इस राज़ (भेद) को हम हल कर लें तो हमारे दोनों हाथ लड्डू रहें, दुनिया में भी सुखी और मर कर भी।

एह लोक सुखीए परलोक सुहेले।।

हम क्योंकि भूल में जा रहे हैं, जिस मकान की बुनियाद टेढ़ी रख दी जाये, कितनी भी मंज़िलें उसके ऊपर चढ़ाओ वे टेढ़ी ही जायेंगी। तो हम जिस्म रखने वाले, शरीरधारी थे, आत्मा देहधारी थे, आत्मा देह धारण किये हुये थे मगर देह का रूप बन गये। यहीं से भूल शुरू हुई और यहीं से मोह में फँस कर दुनिया में लम्पट हो रहे हैं। बार-बार दुनिया में आने का कारण यही है।

जहाँ आसा तहाँ वासा।।

अगर थोड़ी बहुत हम प्रभु की याद करते नज़र भी आते हैं वह किस लिये? कि हमारे दुनिया के सामान बने रहें, हमारी रोज़ी बनी रहे, हमारे बच्चे राज़ी रहें, फलाना बीमार है ठीक हो जाये, फलानी मुश्किल है आसान हो जाये। परमात्मा को एक मददगार चीज़ समझ हम उसको याद कर रहे हैं। तो सच्चे मायनों में हम पुजारी किस के हैं? दुनिया के। दुनिया को पाने के लिए प्रभु को याद कर रहे हैं। ऐसे पुरुष मर कर कहाँ जायेंगे? बार-बार दुनिया में ही आएँगे। सच्चे पुजारी तो दुनिया के हैं न। जो अनुभवी पुरुष जाग उठे हैं, वे कहते हैं, हम तुम्हारी ही तरह इन्सान हैं और वाकई सब इन्सान इन्सान एक हैं। जिस तरफ किसी ने **development** की, तरक्की की, उस तरफ के राज़ (भेद) के जानने वाला हो गया। जो लोग उस तरफ जाना चाहते हैं, उनके लिए

वह मददगार हो जाता है। एक डाक्टर है, वह तुम को डाक्टरी सिखायेगा, जो डाक्टरी सीखना चाहते हैं। वह जिस्म की साईस से माहिर है, वह तुम को जिस्म की साईस सिखला देगा। मगर है इन्सान, फिर डाक्टर होगा। इसी तरह एक वकील है, वह कानून को समझता है। है इन्सान वह भी मगर क्योंकि कानून से वाकिफ है, उसको समझ भी सकता है, **apply** भी कर सकता है, हम उसको **engage** करते हैं, ''महाराज! हमारा मुकद्दमा लड़ दो।'' इसी तरह जो आत्म-विद्या के माहिर हैं, अपने आपका अनुभव जिन्होंने किया है और प्रभु-अनुभव को पा रहे हैं, जीते-जी मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाते हैं और जाग उठे हैं और दूसरों को जगाने के काबिल हैं, ऐसी हस्ती का नाम गुरु, साधु, सन्त और महात्मा है। और ऐसे महापुरुषों की बड़ी भारी महिमा गाई है। आगे हमेशा मुखतलिफ (विभिन्न) महापुरुषों की वाणी रखी जाती है, आज रामायण का कुछ हिस्सा आपके सामने रखा जायेगा। रामायण एक बड़ा भारी अद्भुत ग्रन्थ है। समझे? तो उसमें काकभुशुंडि का ज़िक्र आता है। वे अपनी कथा सुनाते हैं कि भाई मैं क्या था, मैंने क्या किया, क्यों मैंने इस जन्म को पाया? वहां गुरु की बड़ी भारी महिमा बतलाई है, गुरु, **so-called** (तथाकथित) गुरु से मुराद नहीं, आज **so-called** गुरुओं से दुनिया भरी पड़ी है। बट्टा उठाओ, गुरु मिलता है। गुरु उसी का नाम है जो अँधेरे में प्रकाश करे। 'गिरि **root** (धातु) से निकलता है यह लफ़्ज, जो अन्तर में प्रणव की ध्वनि को सुना सके।

धुन आवे गगन ते सो मेरा गुरुदेव।

जो जिस्म को **analyse** करके ऊपर जाता है, दूसरों को ले जा सकता है, जिस की अन्तर की आँख खुली है, परमात्मा की ज्योति को देखता है, दूसरों को दिखा सकता है। वह अखण्ड-कीर्तन, जो

उद्गीत हो रहा है, श्रुति हो रही है, उसको वह खुद सुनता है, दूसरों को सुना सकता है। अरे भई, जो जीते-जी पिण्ड से ऊपर आकर अपने आप सफर करता है, दूसरों को ऊपर जाने के मार्ग का **experience** (अनुभव) दे सकता है, ऐसे पुरुष का नाम साधु, सन्त और महात्मा है।

आपको पता हो, राजा जनक को सारे हिन्दुस्तान भर में दो सम्मेलन करने के बाद एक अष्टावक्र मिले जो जीते जी इस राज़ को समझा सके, **experience** (अनुभव) दे सके। राजा जनक से पूछा अष्टावक्र ने, ''क्यों भई ज्ञान हो गया?'' कहते हैं, ''हाँ महाराज! हो गया।'' लेने वाला कहे कि मुझे कुछ मिला है। तो वह महापुरुष भी हमारी तरह इन्सान ही है मगर इन्सान होते हुए उन्होंने आत्मिक पहलू को, आध्यात्मिक सिलसिले को बढ़ाया है। हम में भी वैसे ही हकूक (सुविधायें) मौजूद हैं, यह नहीं कि उसको खास रियायत, **special concession** रखा गया है। हमने जिस्म के तौर पर, बुद्धि के लिहाज़ से, बाहरी इल्मों के लिहाज़ से तरक्की की है। जो उस इल्म को सीखना चाहे, हम उसको सिखला सकते हैं। मगर हमारा आत्मिक पहलू बहुत कमज़ोर है। **We know little or nothing,** तो जो आत्मविद्या का माहिर, अध्यात्म पुरुष जो हो गया वह देख रहा है कि वह (प्रभु) मुझ में काम कर रहा है। **I and my father are one** और

जैसे में आवे खसम की बाणी तैसड़ा करि ज्ञान वे लालो।।

तो ऐसा पुरुष जो है, उसका नाम साधु, सन्त और महात्मा है। अगर हम इस सोई हुई हालत से उठना चाहते हैं, जागना चाहते हैं तो जागते हुए पुरुषों की सोहबत (संगति) करें।

हमा आलम खुफ़्ता, तो हम खुफ़्ता
खुफ़्ता रा खुफ़्ता कै कुनद बेदार

सारा जहान सो रहा है और तू भी इसके साथ सो रहा है। समझे? सोये हुये को सोया हुआ कैसे जगा सकता है? तो इस वक्त आपको काकभुशुंडि का वाकेया, कि कैसे उन्होंने काग की योनि पाई, है तो बहुत सारा सिलसिला लम्बा सा दिया हुआ, मगर थोड़ा सा आपके सामने रखा जायेगा इस बात को बतलाने के लिए कि हमारे वेद-शास्त्र, ग्रन्थ-पोथियाँ क्या कहते हैं। मनुष्य जीवन पाकर जिसको अनुभवी पुरुष मिल गया, उसका मनुष्य जीवन सफल हो गया। वह पहलू जो हमारा बड़ा **dark** (अंधकारमय) हो रहा है, जिस के मुतल्लिक (संबंधी) हम कुछ नहीं जानते सिवाय इस बात के कि ग्रन्थों-पोथियों में जो लिखा है, उसका उच्चारण कर दें, हमारे **experience** (अनुभव) में उसमें से कोई बात नहीं आई, तो ऐसे पुरुष की सोहबत में हम उस गति को पा सकते हैं जिसको उन्होंने पाया है।

सन्त और पारस में बड़ो अन्तरो जान।
ओह लोहा कंचन करे ओह करले आप समान।।

पारस लोहे को सोना बनाता है, पारस नहीं बनाता। सन्त आपको सन्त बना देता है। इस वक्त काकभुशुंडि का, जो वे गुरु के पास गये इसी चीज़ को हल करने के लिये और फिर उनकी गति को न जान कर उनका निरादर सा किया, उसका **result** (नतीजा) जो हुआ, उसका ज़िक्र करेंगे, गौर से सुनिये। काकभुशुंडि ज़िक्र करते हैं अपने जीवन का पहले थोड़ा सा। वह यह है कि उन्हें बहुत सारी गरीबी आ गई थी। दुखी होकर, कहते हैं, हम उज्जैन शहर में गये। वहाँ अकाल का ज़माना था, उस के गुज़र जाने पर कुछ रुपया मिला गुज़ारे मात्र। कहते हैं, फिर मैंने शिव भगवान की पूजा करनी शुरू की। वहाँ पर जब मन्दिर में मैं जाया करता था तो वहाँ एक ब्राह्मण था जो शिव की पूजा किया करता था। आज के ब्राह्मण और पुराने ज़माने के ब्राह्मण में बड़ा भारी

फर्क है। पहले ज़माने में पैदायशी (जन्मजात) लिहाज से ये समाज नहीं चलते थे। हर इन्सान जिस गति को वह पाता था, उस के मुताबिक वह कहलाता था। ब्राह्मण वही था, 'ब्रह्म बिन्धे सो ब्राह्मण होई', जो ब्रह्म को बिन्ध ले, ब्रह्म का अनुभव करके पारब्रह्म बिन्ध कर पार हो जाये उसका नाम ब्राह्मण था। पढ़ने लिखने वाले का नाम भी ब्राह्मण नहीं था। वह वेदों-शास्त्रों का जो सार है, जो उसको जानने वाला था और तरक्की करके ब्रह्म से पारब्रह्म में जाने वाला था, ऐसे पुरुष का नाम था ब्राह्मण। आजकल तो है न ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण, उस वक्त ऐसा नहीं था। वाल्मीकि डाकू थे, महर्षि वाल्मीकि बन गये। इस बात की तमीज़ उन ज़मानों में नहीं थी। तो वह ब्राह्मण वहाँ शिव भगवान की पूजा किया करता था। वह बड़ा साधु था, परमार्थ के जानने वाला था और महादेव की पूजा करने वाला था। ये ताकतें (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) भी परमात्मा ने बनाई हैं खास-खास काम करने के लिये, उसी की तीन इज़हार की सूरतें हैं कहो। जो जिस शक्ल से भी उस की आराधना करता है, उसको कुछ न कुछ फल मिलता है। और कहते हैं, ''मैं उसके पास गया, साधारण तरीके से गुरु धारण कर लिया। मैं उसकी ख़िदमत (सेवा) तो करता था मगर कपट के साथ करता था, ऊपर-ऊपर से करता था।'' याद रखो, हम लोगों को गुरु मिल भी जाये तो हम उसको सचमुच दिल से तसलीम (स्वीकार) नहीं करते, दिखावे के लिए कर लेते हैं। कहते हैं, '' मैं कपट से उसकी पूजा किया करता था मगर वह ब्राह्मण बड़ा नीति के जानने वाला था और बड़ा दयालु पुरुष था।'' ब्राह्मण ने तो दयालु होना ही है, जो ब्रह्म को बिन्ध कर पार हो जाये। परमात्मा प्रेम है, **compassion** है, दया का स्वरूप है, दया का पुंज है। जो उसको पा गये, अवश्य उनके अन्तर भी वह दया का पुंज होता है। **Love beautifies everything.** उसके

पास कोई जाकर उसका निरादर भी करे तो भी वह प्यार से धोता है। बच्चा अगर हमारी दाढ़ी में हाथ डाल दे तो हम उसको बुरा समझते हैं? प्यार और दया होने के सबब से बच्चे को उस निरादरी पर भी कुछ नहीं कहते, प्यार से और समझाने का यत्न करते हैं। तो इसी तरह कहने लगे कि मैं उस की सेवा किया करता था, कपट से, ऊपर-ऊपर से।

गुरु को ऊपर ऊपर गाता। गुरु को मन भीतर नहीं लाता।।

स्वामी जी महाराज फरमाते हैं, गुरु को ऊपर ऊपर से हम गाते हैं, दिल के अन्तर, जो वह कहता है, उसको धारण नहीं करते। इसलिए हमको अनुभवी पुरुष के मिलने का पूर्ण फायदा नहीं होता। तो इसलिए कहते हैं, एक दिन उन्होंने मुझे बुला कर बड़े नरम दिल होकर बड़े प्यार से समझाया कि देख भाई, मनुष्य जीवन भाग्य से मिला है, तू कुछ किया कर। वह करना क्या है? उपदेश दे दिया और कहा कि इस तरह से तू भी उस मालिक की पूजा किया कर। कहते हैं मैं तो बहुत नीची ज़ात का था, बहुत बड़ा पाप करने वाला था, कमीनी कौम से था, अज्ञान में ऐसा चूर था कि ब्राह्मण और हरि-भक्तों को देख कर, बजाय इसके कि उनकी तारीफ करूँ, अपने दिल में देख कर जला करता था कि इनकी महिमा क्यों होती है? उलटा उन से दुश्मनी करने लगा। गुरु रोज़ प्यार से समझाया करता था मगर मेरे तर्जे अमल (कार्य व्यवहार) को देख कर दुखी होता था। मुझे ज़्यादा गुस्सा आता था क्योंकि पाखण्डी को नीति अच्छी नहीं लगती। कुदरती बात है, जो पाखण्डी हो, उसको नीति का सवाल ही नहीं रहता।

तो आगे वे फिर अब ज़िक्र करेंगे कि मेरा गुरु से क्या ताल्लुक हुआ, मैंने क्या किया और कैसे मैंने इस गति को पाया? यह उसकी

पहली **history** (इतिहास) है थोड़ी सी। हम भी इससे क्या सबक सीख सकते हैं? अरे भाई, अगर हम भी कपट से गुरु की सेवा करते हैं, ऊपर ऊपर से दिखावे से ही तो क्या लेंगे हम? गुरु और शिष्य में दिल से दिल की राह बनता है, **receptivity** बनती है, समझे? 'गुरु गोर अन्दर समाये।' शिष्य ऐसा हो जो गुरु के अन्तर में समा जाये, गुरु उसमें बोले। गुरमुख बने, **mouthpiece of Guru** बने, गुरु **God man** है, **God plus man.** यह **Guru-man** (गुरमुख) बन जाये। जो **Guru-man** बन गये तो परमात्मा उन के अन्तर आ गया कि नहीं? यह भक्ति का राज़ (भेद) है। सेंट पॉल कहता है, **It is I, not now I.** यह मैं हूँ। कहता है, यह मैं नहीं हूँ, **It is not I, but Christ that lives in me**, यह **Christ** (ईसा) मुझ में बोल रहा है। यही हाफिज़ साहब ने कहा—

चुनां पुर शुद फ़िजाये सीना अज़ दोस्त
कि ख्याले खेश गुमशुद अज़ ज़मीरम

कि मेरे सीने (अन्त:करण) की फ़िजा उस प्रीतम से इतनी भर गई है कि मुझे यह ख्याल नहीं रहा कि यह मैं हूँ या वह है, अपना आपा ही भूल गया। इसका नाम है, गुरु भक्ति।

हरि सच्चा गुरु भगती पाइए सहजे मन्नि वसावणिआ।।

अगर गुरु मिल जाये, अगर का सवाल इसलिये पेश किया जा रहा है कि गुरु तो बहुत हैं मगर सच्चा गुरु कहीं-कहीं मिलता है। जो सचमुच में यह समर्था रखता है जिस का आप को ज़िक्र किया जा चुका है, वह बाहर से तो,

तन म्याने ख़ल्को जां नज्दे खुदावन्दे जहां

तन तो उसका लोगों के दरमियान होता है और उसकी आत्मा प्रभु के साथ जुड़ी पड़ी है ।

तन गिरफ़्तारे ज़मीं औ रूह हफ़्ताद आसमां

तन तो ज़मीन पर चलता-फिरता नज़र आता है, खाता-पीता भी नज़र आता है मगर रूह आसमानों का सफर करती है—

सुरत सैल असमान की लख पावे कोई सन्त।

तुलसी साहब फरमाते हैं, आसमानों का सफर हमारी रूह कर सकती है। किस की? किसी सन्त की।

तुलसी जग जाने नहीं अति उतंग पिया पंथ।।

कि ऐ तुलसी! दुनिया के लोग इस राज़ (भेद) से नावाकिफ (अनजान) हैं, कैसे रूह पिण्ड को छोड़ कर ऊपर आसमानों का सफर कर सकती है, कैसे जड़ और चेतन को अलेहदा करके आत्मा ऊपर जा सकती है? कहते हैं, इस राज़ से लोग बेखबर हैं। तो इस राज़ को जानने वाली जो हस्ती है, हमारी तरह ज़ाहिरा इन्सान नज़र आता है मगर अन्तर में वह कुछ और भी है।

वली अल्लाह रा बर क़यासे खुद मगीर

कि वली-अल्लाह (प्रभु-प्राप्त महात्मा) को अपने कयास पर, ज़ाहिरी शक्ल पर मत लो।

कि दर नविश्तन यकसां आयद शेर-ओ-शीर

शेर और शीर दोनों ही लफ़्ज (उर्दू में) एक ही तरह से लिखे जाते हैं। एक (शेर) फाड़ कर खा जाने वाला जानवर है, एक (शीर) आधार देने वाला दूध है। इन्सान-इन्सान सब एक हैं। हमारे अन्तर और उनके

अन्तर में एक ही जैसे हक परमात्मा ने रखे हैं मगर उन्होंने उस दबी हुई चीज़ को मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर निकाल लिया है और हमने अभी नहीं निकाला है।

सबो घट मेरे साईयां सुंनी सेज न कोय।।
बलिहारी तिस घट के जा घट परगट होय।।

कि सब के अन्तर में वह परमात्मा बस रहा है। कहते हैं, वह हृदय मुबारिक है, बलिहार जाने के काबिल है जिसमें वह प्रकट हो गया। तो ऐसे प्रकट हुए (प्रभु को पाये हुए) हृदयों की महिमा के मुतल्लिक (संबंधी) इसमें ज़िक्र आयेगा। गौर से सुनिए वे क्या फरमाते हैं?

(1) एक बार गुर लीन्ह बोलाई। मोहि नीति बहु भांति सिखाई।।

कहते हैं, एक मरतबा (बार) गुरु ने मुझे बुला कर बहुत सी नीति की बातें सिखलाई, कई तरीकों से समझाने लगे। आखिर गुरु का काम है समझाना, शिष्य समझे चाहे न समझे। बार-बार समझाना होता है। बच्चा अगर बहुत बिगड़ भी जाये तो भी पिता उसको प्यार से समझाता है। वह समझता है, मेरी शरण में आया है, मैंने ही इसको बनाना है। किसी तरीके से भी, कई तरीकों से उसको खैंचता है। तो कहते हैं काकभुशुंडि, मुझे कई तरीकों से समझाया, देख बच्चा, जीवन का आदर्श यह है। हम ने दुनिया में इस तरह से रहना है। ऐसा जीवन बसर करो कि यहाँ भी सुख मिले और आगे भी सुख मिले, दोनों लोकों में तुम्हारी महिमा रहे।

(2) सिव सेवा कर फल सुत सोई। अबिरल भगति राम पद होई।।

कहते हैं, ऐ बेटे! शिव भगवान की सेवा का फल यही है कि राम जी के चरणों में अटल भक्ति पैदा हो। अब राम का लफ्ज़ कबीर साहब

ने कई तरह से बरता है।

एक राम दशरथ का बेटा, एक राम घट घट में बैठा।
एक राम का सकल पसारा, एक राम इन सब ते न्यारा।।

एक राम वे थे जो राजा दशरथ के बेटे थे, चौदह कला सम्पूर्ण अवतार थे, दुनिया के दुख हरण करने को आये। एक राम जो घट-घट में बैठा है (मन)। एक त्रिलोकीनाथ, तीनों लोकों को जो नथ रही ताकत है। एक राम जो इन सब का जीवनाधार है, वह राम है। तो राम के, किसी के पास भी जाओ, ये खुद ही बयान करते हैं आगे जा कर कि लोगों से मैंने कहा कि राम वह है जो सब में रम रहा है। कहते हैं, यह ठीक है रम तो रहा है, मुझे तो चाहिए वह शक्ल जो प्रकट होकर सामने आए।

माना कि तू दिल के खलवत कदा में है मकीं,

हम मानते हैं कि तू हमारे घट में है प्रभु, रम रहा है मगर —

ज़रा सामने आ के तू बैठ जा कि नज़र को खूए मजाज है।

भक्त चाहता है भगवान को प्रकट देखना। तो कहते हैं वह भगवान जो रम रहा है, वह तो ठीक है। कहीं पर अगर वह प्रकट है तो उसके दर्शन कराओ। यही भगवान कृष्ण जी, जब एक बार गोपियों से दूर चले गये, कुछ मुद्दत (समय) वहाँ रहे। गोपियां बड़ी विरह और सोज़ (संताप) में जल रही थीं, तो ऊधो को भेजा कि जाओ, उनको थोड़ी ज्ञान-ध्यान की बातें सुना आओ। ऊधो गये, बड़ी ज्ञान की बातें कीं। ''देखो कृष्ण के लफ्ज़ी मायने हैं, यह लफ्ज़ 'कृ' धातु से निकलता है, जो आत्मा के नज़दीक है। कौन? परमात्मा। कि वह तो तुम्हारे अन्तर में है। अरे, तुम क्यों सोज़-गुदाज़ (विरह) में बिहबल

(व्याकुल) हो। भगवान कहाँ नहीं है? '' खैर, बातें बहुत सुनाई। वे सुनती रहीं। आखिर पूछने लगीं, ''ऐ नारायण! जो कुछ तुम कहते हो वे बातें तो ठीक हैं मगर तुम यह बताओ कि जो आँखें उस मुरली मनोहर को किसी जिस्म में इज़हार करते हुए देखना चाहती हैं, उनके लिए तुम्हारे पास क्या इलाज है?'' ज्ञान-ध्यान सब ठीक हैं, वह सब के अन्तर है, जब तक वह आँख न बने, वह नज़र न आए। इसलिए भक्त का दिली जज़्बा उसको **materialise** (प्रकट) कर लेता है कह दो। काकभुशुंडि ने आखिर जा कर यह अपना किस्सा बयान किया। तो कहते हैं कि मेरा गुरु मुझे समझाने लगा, तो क्या कहा कि देख भई, शिव भगवान की पूजा का फल यही है कि हमारा दिल उस राम के चरणों में लग जाये।

उस राम, रमी हुई ताकत के इज़हार (अभिव्यक्ति) की दो सूरतें होती हैं। एक, जो दुनिया के अधर्म को दूर करने के लिये, धर्म को स्थापित करने के लिए, अधर्मियों को दण्ड देने के लिए, धर्मियों को उबारने के लिए और दुनिया की स्थिति को कायम रखने के लिए, यह एक पहलू उसके इज़हार का है। इस को **Negative Power** (काल पावर) कहते हैं। दूसरा पहलू इज़हार का यह है कि वह आत्मा को, जो मन-इन्द्रियों के घाट पर घिरी पड़ी है, इस से आज़ाद करके प्रभु से जोड़ता है। ये उसी राम ताकत की दो इज़हार की सूरतें हैं। तो कहते हैं, किसी भी इज़हार में उस के दर्शन होने चाहिएँ। तो कहते हैं, उसने कहा, भई राम से मिलने के लिए यह सब यत्न है। यह जो पूजा है, पूजा एक ज़रिया है न उस रमे हुए राम के साथ जुड़ने के लिए? दो किस्म की विद्यायें हैं— एक अपराविद्या है, दूसरी पराविद्या। अपराविद्या में ग्रन्थों-पोथियों का पढ़ना-पढ़ाना, रस्म-रिवाज, तीर्थ-यात्रा, हवन-दान, यह वह सब शामिल हैं। यह पहला कदम है। पढ़ने से रुचि

बनेगी, शौक बनेगा। अब हम काकभुशुंडि का वाकेया (वृत्तान्त) पढ़ रहे हैं। दिल में आ रहा है , क्या हुआ भई, कैसे हुआ? तो इससे रुचि बनेगी और पूजा-पाठ वगैरा करने से, हवन-दान, यह वह, रस्म-रिवाज के अदा करने से भाव-भक्ति बनती है। यह ज़रिया (साधन) है, एक **preparation of the ground** है, **higher purpose** के लिए (परमार्थ के लिये ज़मीन की तैयारी है)। तो कहते हैं, यह ज़रिया (साधन) है उस राम से मिलने का। समझे? यह शिव पूजा जो है, जो मैं कर रहा हूँ, तुम भी करो, तुम्हें भी आखिर राम मिल जायेगा।

(3) रामहि भजहिं तात सिव धाता। नर पांवर कै केतिक बाता।।

कि ऐ प्यारे! जितने ये शिव और ब्रह्मा वगैरा हैं, जितनी ताकतें हैं, ये भी उसी राम ही की पूजा कर रही हैं, समझे। जिनको हम भगवान कहते हैं, शिव भगवान, ब्रह्मा जी, विष्णु भगवान कहते हैं, वे भी उसी की पूजा कर रहे हैं। ये सब उसकी इज़हार की सूरतें हैं, उसी के आधार पर ये चल रहे हैं। तो कहते हैं, इन्सान बेचारे का क्या है? जब वे ताकतें भी उसकी पूजा करती हैं तो हमें भी उस की पूजा करनी चाहिये। यह जीव बेचारा क्या है? जो स्विच बन गये उसकी पावर के इज़हार के, जब वे उस का आधार ले रहे हैं तो हमें भी उसी से जुड़ना चाहिए। तो इस लिये यह जो पूजा का ज़रिया है, यह एक **means to the end** (एक चीज़ को पाने का साधन मात्र) है। ऐ बेटे! ऐ बच्चे! तू उसकी पूजा कर। **Ultimate goal** (अन्तिम आदर्श) क्या है? प्रभु को पाना, उस रमी हुई ताकत से मिलना। हमारी आत्मा उस में रम जाये। यह कब हो सकता है? यह मनुष्य जीवन में ही हो सकता है।

भई परापति मानुख देहुरीआ।।

गोबिन्द मिलण की एह तेरी बरीआ।।

उस प्रभु के पाने का यह वक्त है, मनुष्य जीवन ही।

अवरि काज तेरै कितै न काम।।
मिल साध संगत भज केवल नाम।।

भई और जितने तू काम कर रहा है, ये प्रभु के पाने में मददगार नहीं। प्रभु के पाने में मददगार केवल दो चीजें है, एक उन की सोहबत जिन्होंने पाया है यानी साधु संग और दूसरे, वह परिपूर्ण परमात्मा, जिस के साथ आत्मा जुड़ कर हमेशा के लिये आना-जाना खत्म हो जाता है। कहते हैं, राम की पूजा कर भई, उसी को पाने के लिये, उस की जितनी भी हैं इज़हार की सूरतें, ब्रह्मा जी हैं, शिव भगवान हैं, विष्णु भगवान हैं, सब उसी की पूजा कर रहे हैं। तो इन्सान की क्या गति है? इन्सान की भी उसकी पूजा करने के बगैर गति नहीं होती।

(4) जासु चरन अज सिव अनुरागी। तासु द्रोहँ सुख चहसि अभागी।।

कहते हैं, जिसके चरणों के प्रेमी यह शिव और ब्रह्मा जी भी हैं, उस राम ही के इज़हार हैं न, उसी से ताकत ले रहे हैं। कहते हैं, उस के साथ दुश्मनी करके सिर्फ बदकिस्मत इन्सान ही सुख चाहता है। उसको न याद करना, उसके साथ न जुड़ना, फिर दुनिया में कैसे सुखी हो सकते हैं?

नानक दुखीआ सभु संसार।।

ऐ नानक, सारा जहान ही दुखी है, समझे। कौन सुखी है?

सो सुखिया जिस नाम आधार।।

नाम किस को कहते हैं? वह परिपूर्ण परमात्मा जो रम रहा है, सब खण्डों-ब्रह्माण्डों को आधार दे रहा है, उस का नाम है 'नाम'। जिसकी

आत्मा राम-नाम से लग गई कहो, उसका कल्याण है, वह सुखी हो गया। इसको छोड़कर यह इन्सान कैसे सुखी हो सकता है? देखिये, आज दुनिया में दुख क्यों ज़्यादा है? हम ने जिस्मानी तौर पर बड़ी तरक्की की है। **Socially** (सामाजिक तौर पर), **politically** (राजनैतिक तौर पर) भी, बुद्धि के लिहाज़ से भी बड़ी भारी तरक्की की है जिसको देख कर अक्ल दंग रहती है। आज रॉकेट चांद से गुज़र कर सूर्य तक चक्कर लगा रहा है। सवा घंटे के अन्दर सारी दुनिया के गिर्द चक्कर लगाये हैं कुत्तों ने भी। फिर टेलीविज़न है। हजारों मीलों पर तुम देख रहे हो, कौन बोलता है, क्या बोल रहा है। रेडियो बन गये, हवाई जहाज़ बन गये। क्या कुछ बन गया? क्या हम सुखी हैं? नहीं। सारा ज़हान फिर भी दुखी है। इसका कारण क्या है? कि इस ने अपनी आत्मा को नहीं जाना है। भूल में जा रहा है मन-इन्द्रियों के घाट पर। अन्तर से सो रहा है बाहर फैलाव के कारण और अपने आप के न जानने के सबब से प्रभु का अनुभव नहीं पा रहा। इसलिये सब दुखी हैं। यही तुलसी साहब ने कहा कि सारी दुनिया ही, सारा जहान ही दुखी है, कोई तन करके, कोई धन करके, कोई मन करके।

इक न इक दुख सबन को।।

तो फिर सुखी कौन है? कहते हैं—

सुखी संत का दास।।

जो संत का दास बना। संत किस का नाम है? जिस के अन्तर में मालिक प्रकट हो गया। दूसरों को प्रकट करा सकता है, थोड़े लफ्ज़ों में। उनके पास क्या है?

तुरत मिलावें राम से उन्हें मिले जो कोय।।

उनके पास यह **portfolio** (विभाग) है। जो भी आये उस के साथ जोड़ देते हैं इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर। तो हमारा **ultimate goal** (अन्तिम आदर्श) क्या है? प्रभु भक्ति। वह परमात्मा जो रम रहा है, उस के पाने के लिये, जिन्होंने पाया है उनकी सोहबत करो। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि देख भई! तू कुछ किया कर? फिर वे लोग बदकिस्मत हैं जो प्रभु को छोड़ कर, उसके साथ न जुड़ने पर भी सुख की आशा कर रहे हैं। वे कैसे सुखी हो सकते हैं?

(5) हर कहुं हरि सेवक गुर कहेऊ। सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ।।

कि गुरु ने शिव जी को विष्णु का सेवक बतलाया। ऐ गरुड़! सुन, मेरा तो यह बात सुन कर दिल जल गया। गुरु ने यह बतलाया, शिव भगवान भी, विष्णु भगवान भी, ये सब ताकतें उसी एक राम के आधार पर चल रही हैं। बात असल तो यही है न। कहते हैं, यह बात उसने बतलाई, मेरी इस से तसल्ली नहीं हुई।

(6) अधम जाति मैं बिद्या पाएँ। भयउँ जथा अहि दूध पिआएँ।।

कहते हैं मैं नीची ज़ात का हूँ। नीच ज़ात के मायने, जो नीचे, इन्द्रियों के रसों-भोगों में फँसे हैं, वे सब नीच ज़ात के हैं। कहते हैं, मैं विद्या पा गया, बड़ा विद्वान बन गया विद्या पा कर। मेरी क्या गति हो गई कि जैसे साँप को दूध पिलाया जाये, और ज़हर बढ़ती है। आलिम (विद्वान) होना यह कोई ज़रूरी निशानी नहीं कि वह अनुभवी पुरुष है। इल्मियत कुछ और चीज़ है, अनुभव कुछ और चीज़ है। इल्म क्या चीज़ है? हमारी सुरत जब दिमाग के **centre** (केन्द्र) से जुड़ती है, **brain** (दिमाग) के, उस का नतीजा इल्म (विद्या) है। जब हमारी सुरत या आत्मा परिपूर्ण परमात्मा से जुड़ती है, उसका नाम अनुभव है, परमात्मा का पाना। बड़ा भारी फ़र्क है। आमिल (अनुभवी) के गले में

इल्म (विद्या) फूलों का हार है। अगर वह आमिल पुरुष है, अनुभवी पुरुष है तो एक चीज़ को कई तरीकों से आप के सामने पेश करेगा। अगर वह अनुभवी नहीं है, उसकी आत्मा प्रभु से जुड़कर उसका **mouthpiece** (मुख) नहीं बनी है तो ऐसे पुरुष के सिर पर इल्म कैसा है, यह मिसाल देते हैं, जैसे साँप को दूध पिलाया जाये तो और ज़हर बढ़ती है। कहते हैं मेरी गति यह हो रही थी। अपना हाल बयान कर रहे हैं, इकरार कर रहे हैं। जब गुरु मिलता है न, पहले तो आदमी अकड़-अकड़ कर चलता है, ओ हम बहुत जानते हैं ग्रन्थों-पोथियों से, तुम कौन हो? पीछे जब अनुभव नहीं मिलता तो आखिर आकर चरणों में सिर नीचा करना पड़ता है। तो कहते हैं काकभुशुंडि कि मैं भूल में था, मैं नीच कर्मों वाला था, बन गया आलिम-फाज़िल (विद्वान)। यह ऐसा हो गया कि यह इल्म ही मुझे और ज़हर बढ़ाने का कारण बन गया।

(7) मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती। गुर कर द्रोह करउं दिनु राती।।

कहते हैं मैं मगरूर था, मक्कार था, बदनसीब था और नीची कौम वालों में से था। गुरु के साथ दिन रात द्रोह करने लग गया। मैं आलिम (विद्वान) हूँ, गुरु क्या जानता है? ऐसा आजकल भी होता है। गुरु से मिल गये आलिम-फाज़िल (विद्वान); ओहो! यह तो मैं भी जानता हूँ, फलानी जगह यह लिखा है, फलानी जगह यह लिखा है। अरे भई, जो चीज़ उस को मिली है, वह आपको नहीं मिली तो क्या मिला? वह तुम्हारी आत्मा को इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर अन्तर की आँख खोल सकता है। तुम केवल इल्म (विद्या) ही दे सकते हो। **Bookish knowledge is all wilderness,** किताबों का ज्ञान-ध्यान एक जंगल है जिसमें इन्सान भटकता फिरता है, हकीकत मिलती नहीं।

मैं पश्चिम में अमेरिका गया। वहाँ लोगों ने कहा, ''भई, आपने जो बयान किया परमार्थ, वह तो बड़ा **simple** (सादा-सरल) रास्ता है, आत्मा को आज़ाद किया, बिठाया और अन्तर में जुड़ गये, यह मुश्किल क्यों बन गया?'' मैंने कहा, ''जो विद्वान थे, पढ़े-लिखे लोग, चीज़ का कुछ पता नहीं, देखा नहीं न। यह यह है, यह वह है, उनकी तफतीरें (व्याख्याएँ) उलटी मुश्किल बन गई लोगों के लिये।'' अनुभवी बातें नहीं करता, बिठा कर ऊपर **way up** कर (उभार) देता है (रास्ता खोल देता है), तुम देखने वाले बन जाते हो। लेने वाला खुद कहता है, हाँ भई, है। आलिम सौ बात करे। आलिम (विद्वान) क्या करते हैं? मैंने एक किताब पढ़ी। उसका नाम 'गुरमत निर्णय' है। बड़े आलिम-फाज़िल ने लिखी है। वे क्या लिखते हैं कि जहाँ भी अन्तर में ज्योति का ज़िक्र आता है या किसी ध्वनि का ज़िक्र आता है, ज्योति-वोति अंतर कोई नहीं है, सिर्फ खुशी के इज़हार के लिये ही हम कहते हैं, भई बाजे बज पड़े, चिराग जल पड़े। अन्तर में कुछ नहीं है। अरे भई, जो आमिल (अनुभवी) है, वह हँसेगा कि नहीं? वह आमिल जब बिठाता है, बच्चा बैठता है वह भी देखता है कि परमात्मा ज्योति-स्वरूप है कि नहीं? **God is light,** खुदा नूर है। वह उसको दिखा सकता है। यही बड़ाई है उसमें। तो कहते हैं, मैं अपने इल्म के घमण्ड में, जैसे साँप को दूध पिलाया जाता है तो और उसकी ज़हर बढ़ती है, मैं उलटा गुरु के साथ मुखालिफत (विरोध) करने लग गया।

(8) अति दयाल गुर स्वल्प न क्रोधा। पुनि पुनि मोहि सिखाव सुबोधा।।

मगर गुरु बड़े रहम-दिल थे, अति दयालु थे। थोड़ा भी इस बात पर गुस्सा नहीं किया। कोई बात नहीं, आज समझेगा, कल समझेगा, कल नहीं, परसों समझेगा। फिर समझाते रहे प्यार से, बार-बार मुझे

समझाते, देख बच्चा, बात यह है, बड़े ठण्डे दिल से। असल बात यह है एक बच्चा है, तुम हो बी. ए. पास। अब बच्चे से यह उम्मीद करो कि बी. ए. पास की बातें करे, कैसे हो सकता है? तो उस्ताद (अध्यापक) को गुस्सा नहीं करना चाहिये, उस्ताद को समझाना चाहिए। बच्चे का क्या कसूर है?

मैं आप को आज अर्ज़ करूँ, 1903 ई. की बात है। मैं तीसरी जमात मैं पढ़ा करता था। वहाँ एक आदमी आया, लेक्चर देने लग गया। मैं उसके मुँह की तरफ देखता था कि वह कहाँ से बोलता है क्योंकि तीसरी जमात में मेरी समझ यही थी कि किताबों ही से पढ़ा जा सकता है, समझे? मैं बड़ी हैरानी से(सोचता रहा), अब भी बड़ी अच्छी तरह याद है मुझे, अरे भई, यह कहाँ से बोलता है? अब मैं समझता हूँ कि यह बड़ी मामूली बात है। भई एक बच्चा जो इन्द्रियों के घाट पर बैठा है, उससे कहो अन्तर में रोशनी है, तो वह कहता है, रोशनी कहाँ है? कैसे हो सकता है? मर तो नहीं जायेंगे? हज़रत मुहम्मद साहब को सवाल किया गया कि महाराज! आप तो कहते हैं कि जीते जी मरना चाहिए, कहीं मर तो नहीं जायेंगे, कब्रिस्तान में तो नहीं पहुँच जायेंगे? कई भाई इससे भी डरते है, पिण्ड से जब रूह ऊपर जाती है, हाय मौत। वे अभ्यास ही छोड़ देते हैं। तो हज़रत मुहम्मद साहब ने कहा—

ई न मरगे आं कि दर गोरे रवी।

यह मौत वह नहीं कि तुम को कब्रिस्तान में पहुंचा दे बल्कि जो जुलमत से, अँधेरे से नूर (प्रकाश) की तरफ ले जाने वाली है, नूर प्रकट होता है। जब तक रूह हिसों (इन्द्रियों) से ऊपर न आये, उस को कैसे पा सकता है? वह अदृष्ट और अगोचर है, जब तक,

एवड ऊचा होवै कोइ।। तिस ऊचे को जाणे सोइ।।

जब तक उसी लैवल पर तुम नहीं आते, उसको कैसे पा सकते हो? समझे। तो यह **self-analysis** (आत्मा को चीन्हने, शरीर से अलग करने) का मज़मून है। आलिम लोग इसको समझ नहीं सकते। वे कहते हैं, हाय मर जायेंगे।

तो कहने लगे (काकभुशुंडि), इससे मैं गुरु की मुखालिफत (विरोध) करने लगा। मगर वे (गुरु) दयाल पुरुष थे। मैंने तो बहुत गुस्सा किया अपनी तरफ से, यह वह किया मगर वे गुस्से में नहीं आये। फिर प्यार से समझाया कि देख बच्चा असल बात यह है। याद रखो जब भी किसी महात्मा के पास जाओ तो एक चीज़ याद रखो, जो कुछ तुम जानते हो वह तो जानते ही हो, वह तो तुम्हारा कमो बेश (घटे/बढ़ेगा) नहीं होगा, जाओ, सुनो, वह क्या कहता है? उसको समझने का यत्न करो। हम लोग क्या करते हैं? अव्वल तो जाते ही नहीं। पहली चीज़ नम्रता है याद रखो। जब तक नम्रता न धारण करे इन्सान, वह किसी के पास नहीं जाता। मैं आलिम, मैं फाज़िल, मैं हाकिम, मैं अमीर, मैं बादशाह, मैं क्यों जाऊँ? इसी ज़ोम(अकड़) में रह जाता है। अनुभवी पुरुष आते हैं, **average** (साधारण) तबके (क्लास) के लोग फायदा उठा जाते हैं, आलिम (विद्वान) खाली रह जाते हैं। अगर चले भी गये तो वे अपने ज़ोम (घमण्ड) में बैठे रहते हैं, यह फलानी जगह लिखा है, हम भी जानते हैं, यह क्या जानता है, मैं ज्यादा बतला सकता हूँ। जो प्याला सुराही के नीचे रहेगा, वही भरा जायेगा, जो सुराही के ऊपर रहेगा प्याला, वह कैसे भरेगा? आकर भी खाली चला जाता है। तो अनुभवी पुरुष के पास जाकर अपने इल्म का ज़ोम (घमण्ड) नहीं करना चाहिए। हाँ, समझने का यत्न करना चाहिए। जो नेक नीयती (साफ-दिली) से सवाल हो, बेशक करो। भगवान कृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय में इस बात का बड़ा निर्णय किया है,

''अगर तुम को ज्ञान पाने की ख़्वाहिश है, जाओ ऐसे महात्मा के पास जो अन्तर में परमात्मा के दर्शन करते हैं।'' फिर आगे कहते हैं, ''नेक नीयती से सवाल करके हर एक सवाल का जवाब लो। वितण्डावाद (निरर्थक दलीलबाजी) की खातिर नहीं, **discussions** की खातिर नहीं। जब बात समझ में आ जाये, भरोसा बनेगा । भरोसा बने तो फिर जो वह कहे, वह तुम करो। तुम भी उस गति को पा जाओगे।'' तो कहते हैं, मैं आलिम (विद्वान) बन गया, मैं इन्द्रियों के भोगों-रसों में था, मैं अहंकारी था, मक्कार था, सारे ऐब (नुक्स) मुझ में थे। मैंने कहा, ओह! मैं जानता हूँ, गुरु क्या है?

(9) जेहि ते नीच बड़ाई पावा। सो प्रथमहिं हति ताहि नसावा।।

उसकी ज़ात से मिलने से **low** से **low** पुरुष, कमीने से कमीना पुरुष (अधम से अधम) भी उस **higher** (ऊँची) गति को पा जाता है। वह पहले इसी गति को समझाना चाहता है। अरे भई, बात क्या है? बात समझ में न आये उस का भी क्या कसूर है? उसका दिल-दिमाग रंगा पड़ा है बाहरी इल्मों से। जब तक ये नफी न करे, हां उस से मिसालें तो ले समझने के लिए मगर जब तक यह **experience** (अनुभव) न मिले तब तक काम नहीं बनता। जब सही चीज़ मिल जाती है, सब ग्रन्थ-पोथियाँ खुल जाती हैं, सारे महात्मा यही कह रहे हैं। जब तक वह **first hand experience** (अनुभव) नहीं मिलता, यह भूल में रहता है।

(10) धूम अनल सम्भव सुनु भाई। तेहि बुझाव घन पदवी पाई।।

अब कहते हैं, ऐ भाई सुनो! गुरु ने कहा, धुआँ आग ही से पैदा होता है, वह बादल बन कर उसी (आग) को बुझाने का कारण बन जाता है। कि जो पुरुष गुरु से मुखालिफत (विरोध) करते हैं, अनुभवी

पुरुषों से, उनको वही बादल बन कर फिर समझाते हैं। उन के दिल में दयामेहर आती है कि बच्चा समझा नहीं, फिर समझाओ इसको, फिर समझाओ, फिर समझाओ। आखिर कोई समय आता है, चीज़ समझ में आने लग जाती है कि बात क्या है।

(11) रज मग परी निरादर रहई। सब कर पद प्रहार नित सहई।।

मिसाल देते हैं कि ऐसे पुरुषों की क्या गति है? जैसे धूल होती है न धूल, रास्ते में ज़लील हो कर पड़ी रहती है, सबके पाँव की लताड़ सहती है। पांव के नीचे दबी जाती है न। है मिट्टी बिल्कुल,मगर क्या हश्र (परिणाम) होता है, उसका?

(12) मरुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई। पुनि नृप नयन किरीटन्हि परई।।

जब हवा उसे उड़ाती है तो क्या होता है? पहले हवा में भर जाती है, फिर बादशाहों के ताजों और सिरों पर पहुँचती है, समझे। आखिर खाक नम्रता धारण कर ले तो बादशाहों के ताजों और सिरों पर निवास करती है। नम्रता बड़ी भारी चीज़ है भई। सेंट आगस्टन से पूछा कि परमात्मा कैसे मिलता है? कहते हैं, नम्रता धारण करो। **First humility, second humility and third humility.** नम्रता हो तभी किसी के पास जाये, नम्रता हो तभी किसी की बात सुने। जब चीज़ मिल जाये, फिर भी समझे यह किसी की दात है। खज़ांची के पास एक लाख रुपया आ गया। उस का क्या है? अमानत है। तो सन्तों का शृंगार नम्रता है सच्चे मायनों में। तो कहते हैं, वे लोगों के सिरों के ताज बनते हैं नम्रता धारण करके। क्या किसी बादशाह के ताज पर तुम बैठ सकते हो जाकर? धूल बैठ सकती है। मिसाल देकर समझाने का यत्न किया है कि अगर तुम इतने नम्र बन जाओ जितनी कि धूल है तो इस गति को पा जाओगे। महापुरुषों ने और कई तरीकों से कहा है। कबीर साहब

से पूछा कि राम-भक्त को , प्रभु भक्त को कैसा होना चाहिए। कई मिसालें दीं, पहले कहा—

रोड़ा होए रहु बाट का, तज मन का अभिमान।

कि रास्ते के रोड़े बन जाओ, अभिमान को छोड़ दो। कहते हैं—

रोड़ा हुआ तो क्या हुआ, पन्थी को दुख देइ ।

रोड़ा भी दुख का कारण बनता है। यह भी मिसाल अच्छी नहीं भई। फिर कहते हैं, 'ज्यों धरनी में खेह।' यही धूल की मिसाल उन्होंने भी दी है। कहते हैं, खेह हुआ तो भी क्या हुआ। भई, वह 'उड़ उड़ लागे अंग।' वह भी कपड़ों के साथ जा कर लगती है। कहते हैं फिर क्या हो? कहते हैं, 'पानी जैसा हो।' कहते हैं पानी भी कभी गर्म, कभी सर्द, यह भी आदर्श ठीक नहीं है। फिर हरि-जन को कैसा होना चाहिये? 'हरि ही जैसा हो।' चाहिए कि भगवान भक्त के अन्दर ही प्रकट हो जाये, उसके गुण इस के अन्दर आ जायें तो लोगों के सिरों का ताज हो जाये, उसके गुण इस के अन्दर आ जायें। यह है आदर्श। कैसे? नम्रता के कारण। अगर नम्रता बन जाये तो लोगों के सिरों का ताज हो जाये। आज गुरु नानक साहब को सब नानक नानक हो रही है। क्यों? नम्रता भाव से। कहाँ नहीं गये? सब तीर्थों पर गये, मक्के-मदीने भी गये, फारस में भी गये, बंगाल भी गये, बर्मा तक, संगलाद्वीप (लंका) तक, चीन तक गए। पहाड़ों पर योगियों से मिले। नम्रता थी तो मिले न। यह अलेहदा बात थी कि वह चीज़ जिसको हम भूल रहे थे, उसको ताज़ा किया। तो नम्रता बड़ी भारी चीज़ है भई, नम्रता को धारण करो।

(13) *सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा। बुध नहिं करहिं अधम कर संगा।।*

कहते हैं, ऐ गरुड़! सुनो, इस बात को समझ कर अकलमन्द लोग कमीनों की सोहबत से परहेज़ करते हैं। पानी सब पानी है मगर गन्दे नाले के पानी को कोई नहीं पीता। परमात्मा सब में है मगर जिनमें ये बुराइयाँ इन्द्रियों के भोगों-रसों की, मान-बड़ाई, ईर्ष्या-द्वेष, यह वह बन रही हैं, अरे भई, वहाँ उनकी सोहबत में वैसा ही रंग मिलेगा न। जैसी सोहबत वैसा रंग। तो अनुभवी पुरुष कहते हैं कि भई, ऐसों से परहेज़ करो, संगत का असर सबसे बड़ा होता है,जैसी सोहबत, वैसा रंग।

सोहबते सालह तुरे सालह कुनद।
सोहबते तालह तुरे तालह कुनद।।

सोहबत का असर बड़ा भारी होता है। तो सोहबत के असर के लिए 'महाभारत' में ज़िक्र आया है, जिस तरह फूलों की खुशबू सब साथ की चीज़ों को, चाहे वह मिट्टी हो, पानी हो या कपड़े हों, सबको खुशबूदार कर देती है, इसी तरह नेक की सोहबत उस की सोहबत करने वाले को अपना असर देती है। मूढ़ों की सोहबत अविद्या का रंग देती हैं। सन्तों और महापुरुषों की सोहबत सत्य और धर्म का असर देती है। इसलिए चाहिए कि सन्त-महात्मा की संगत करे ताकि उनके शान्तिदायक असर को ग्रहण कर सके। यह 'महाभारत' कह रही है। तो सोहबत संगत का रंग बनता है। तुलसीदास बड़ी खूबसूरती से हर एक पहलू को थोड़ा **touch** (टच) करते जाते हैं। एक वाकेआ बयान करते हुए उसके कई पहलुओं का साथ ही साथ ज़िक्र करते जाते हैं। रामायण में एक बड़ी भारी खूबसूरती यही है कि कई पहलुओं से बयान करते चले जाते हैं साथ ही साथ कि जो परमार्थ, परम-अर्थ को पाना चाहता है, उसको क्या-क्या करना चाहिए और क्या-क्या नहीं करना चाहिए।

तो कहते हैं, सोहबत और संगत का बड़ा भारी असर होता है। जब तक यह नेकों की सोहबत धारण न करे, बदों (बुरों) से हटे नहीं, काम नहीं बनता, क्योंकि—

साकत का बोलिया ज्यों बिछुआ डसै।।

साकत, जो प्रभु से टूटा पड़ा है, उसके मिलने से जैसे बिच्छू डंक मारता है, मामूली काँटा सा चुभता है, पीछे कड़वल पड़ते हैं, ऐसे ही जो बुरी सोहबत, जो फैलाव में जा रहे हैं, अपने आप का अनुभव नहीं कर रहे, ऐसे पुरुषों की सोहबत बे-अख्तियार तुम्हें उसी रंग में रंग देगी। तो कहते हैं, इसलिए अकलमन्द लोग, जो परमार्थ को पाना चाहते हैं, जन्म को बरबाद नहीं करना चाहते, वे टूटे हुओं की सोहबत से परहेज़ करते हैं।

(14) कबि कोबिद गावहिं असि नीती। खल सन कलह न भल नहिं प्रीती।।

जो पण्डित लोग हैं, जो उस प्रभु के गुणानुवाद गाने वाले लोग हैं कहो, उसके राग के गाने वाले हैं, कहते हैं, वे ऐसी ही नीति गाते हैं। यही नीति बतलाते हैं कि बदों की सोहबत से हटो, नेकों की सोहबत अख्तियार करो। **A man is known by the society he keeps.** किसी इन्सान को जानना हो तो उसकी सोसायटी से जानो कि उस की सोसायटी (संगत) कैसी है। कायदे की बात है, नेक जो होगा वह नेकों की सोहबत अख्तियार करेगा। जो परमार्थी है, परमार्थी पुरुषों की सोहबत अख्तियार करेगा। अरे भई, जो मन-इन्द्रियों के घाट पर इन्द्रियों के भोगों-रसों में लम्पट हैं, ऐसे पुरुषों की सोहबत अख्तियार करेंगे जो उस में रंगे जा रहे हैं। तो कहते हैं, ऐसे आदमियों से दुश्मनी करना, नफरत रखना, उनको अच्छा नहीं लगता। तो ऐसे पुरुषों से हमेशा ही प्यार और सलीके से काम करो। वह नीति यही बतलाते हैं कि

नेकों की सोहबत करो, उनसे प्यार करो, उनसे दुश्मनी न करो।

(15) उदासीन नित रहिअ गुसाईं। खल परिहरिअ स्वान की नाईं।।

तो इसलिए कहते हैं, भई उन से अलग-थलग, उदासीन होकर रहो उन की सोहबत से। स्वामी जी महाराज ने कहा न—

हट रहो खास और आम से।

ऐसे पुरुषों से दूर रहो। किस तरह? मिसाल देते हैं कि जैसे बदज़ात आदमी को, ज़ात उनकी अच्छी नहीं, वह ज़हरीयत में रंगी पड़ी है इन्द्रियों के भोगों-रसों में, कहते हैं, उनको इसी तरह छोड़ देना चाहिये कि जैसे कुत्तों की सोहबत तुम अख्तियार नहीं करते। कुत्ते बड़े ज़लील (गंदे) गिने जाते हैं न। कहते हैं, जैसे कुत्तों की सोहबत तुम नहीं पसन्द करते, इसी तरह वे उनको पसन्द नहीं करते, छोड़ देते हैं। मिसाल देते हैं, कुत्तों में भी गुण हैं मगर एक पहलू रहा कि इन्सान कहाँ और कुत्ता कहाँ? ज़लील समझते हैं, इसलिये ऐसे पुरुषों से ऐसे ही परहेज़ करो जैसा तुम कुत्तों से करते हो।

(16) *मैं खल हृदयं कपट कुटिलाई। गुर हित कहइ न मोहि सोहाई।।*

कहते हैं मेरे अन्दर गलाज़त (मैल) भरी पड़ी थी, मैं दुष्ट था, मक्कार था, बड़े **low** (नीच) ख्याल वाला बंदा था। उनकी (गुरु की) यह समझाने वाली बात मुझे दिल से अच्छी न लगी। यह कायदे की बात है, जो रंगा पड़ा हो न एक खास रंग में, उसको कोई और बात कहे, वह कहता है अरे भई, क्या कहते हो, जाओ, हमें पसन्द नहीं हैं। कहते हैं, मेरी यही गति थी। गुरु बार-बार प्यार से समझाते थे, मैं समझता नहीं था।

(17) दोहा- *एक बार हर मन्दिर जपत रहेउं सिव नाम।*
गुर आयउ अभिमान तें उठि नहिं कीन्ह प्रनाम।।

कहते हैं, एक मरतबा (बार) मैं शिवालय में बैठा था, शिवजी का नाम जप रहा था। गुरु आये, मैं अहंकार में, ओह! क्या है, बैठा रहा, उठा नहीं। तो कहते हैं, उसका क्या हुआ आखिर? कहते हैं, मुझ में अंहकार आ गया, हुआ क्या, यह क्या जानता है? मैं अच्छी पूजा कर सकता हूँ।

(18) दोहा- सो दयाल नहिं कहेउ कछु उर न रोष लव लेस।
अति अघ गुरु अपमानता सहि नहिं सके महेस।।

कहते हैं, वे तो दयालु पुरुष थे, उन्होंने तो कुछ नहीं कहा, ज़रा भी गुस्सा उनके दिल में नहीं आया, लेकिन गुरु की बेइज़्ज़ती (अपमान) देख कर शिव भगवान सहार न सके कि इसने बहुत उपद्रव किया है।

(19) मन्दिर मांझ भई नभ बानी। रे हतभाग्य अग्य अभिमानी।।

कि मन्दिर में बैठे हुए नभ से वाणी आई, क्या कहा, कि ऐ बदनसीब, अधर्मी और अभिमानी पुरुष! ये आवाज़ आई, तू बदनसीब है, तू अभिमानी पुरुष है, तू अधर्मी है, तुम को नीति का पता नहीं।

(20) जद्यपि तव गुर कें नहीं क्रोधा। अति कृपाल चित सम्यक बोधा।।

कि इसमें शक नहीं कि देख ऐ बदनसीब इन्सान! गो (यद्यपि) तेरे गुरु ने इस बात पर गुस्सा नहीं किया, वे समदर्शी हैं। समझे? वह कहता है यह बेचारा अनजान बच्चा है, उस को गुस्सा नहीं आया क्योंकि वह बड़ा दयालु है, समदर्शी है और मुकम्मल, पूर्ण ज्ञान रखता है, इसलिये उसने तो गुस्सा नहीं किया। उसका कारण यह है कि वह सबके अन्तर, पापियों और पुण्यवानों, दोनों के अन्तर वही (प्रभु को ही) देखता है। वह देखता है यह पापी जो है, आत्मा में तो कोई फर्क नहीं। आत्मा जैसी मन-इन्द्रियों के घाट से रंगी गई, वह देखता है, यह रंगा पड़ा है,

भई। है आत्मा, अजर और अमर है। इसलिये कहते हैं, इस को साफ करना है। उस को रहम आता है। इससे आज हम लोगों को सबक सीखना चाहिए, समझे।

(21) तदपि साप सठ दैहउं तोही। नीति विरोध सुहाइ न मोही।।

कहते हैं, गो (यद्यपि) उन्होंने इस बात को बुरा नहीं माना मगर मैं तुम को शाप दिये बगैर नहीं रहूँगा। क्यों? इसलिये कि नीति के बरखिलाफ (विरुद्ध) कोई हरकत मुझे पसन्द नहीं, यह नीति है।

राम कृष्ण ते को बड़ो, तिन भी तो गुरु कीन्ह।
तीन लोक के नायका, गुरु आगे आधीन।।

भगवान राम और कृष्ण से कौन बड़ा होगा? त्रिलोकीनाथ होते हुए भी गुरु के आगे नमस्कार है, नीति है न। कबीर साहब रामानन्द को गुरु धारण करते हैं नीति के धारण करने के लिए। तो कहते हैं, इस नीति के उलट मैं कोई बात सुनने तो तैयार नहीं। मैं ज़रूर तुम को शाप दूँगा ताकि तुझे यह सबक रहे। और वैसे भी आप देखें, सब महापुरुष यही कहते हैं —

भाई रे गुर बिनु ज्ञानु न होइ।
पूछहु ब्रह्मे नारदे बेद बिआसै कोइ।।

ब्यास से जा कर पूछो, नारद से पूछो, गुरु के बगैर किसी का कल्याण नहीं, गुरु के बगैर गति नहीं।

गुरु बिना गत नहीं। शाह बिना पत नहीं।।

गुरु गुरु हो तो । आज, इस में शक नहीं कि गुरु और साधु के नाम से हम मुतनफर (नफरत करते) हैं । उसका कारण क्या है? कि वे गुरु नहीं हैं, **acting, posing** करते हैं, स्वांग बना रहे हैं, समझे। इस

हकीकत को न खुद पाया है, न दूसरों को दे सकते हैं। उनको क्या करते हैं? बाहरमुखी साधन, अपराविद्या में लगा देते हैं। लगे रहो, भई कोई माँगे, ''महाराज, बख्शिश करो।'' ''ओ भई, हमने पचास साल में ली, तुम्हें अभी दे दें?'' दे सकते नहीं, मन-इन्द्रियों के घाट पर बैठे हुए होने के कारण। वे (शिष्य) जब देखते हैं कि यह हमारी तरह मन-इन्द्रियों के घाट पर बैठा है, तो कहते हैं, **It is all Gurudom.** हमें ऐसे साधु-सन्तों की ज़रूरत नहीं। **Blind leads the blind both fall into the ditch,** अन्धा अन्धे को चला रहा है, दोनों ही गड्ढे में गिरेंगे, और क्या होगा? तो कहते हैं, मैं इस मर्यादा को तोड़ता नहीं, तुम्हें सज़ा दूँगा, शाप दूंगा। आगे और कुछ कहते हैं। समझिए गौर से—

(22) जौं नहिं दण्ड करौं खल तोरा। भ्रष्ट होइ श्रुति मारग मोरा।।

कहते हैं, अगर मैं तुम को ऐ बदज़ात! सज़ा नहीं देता, शाप नहीं देता तो जो श्रुति मार्ग है, वह भ्रष्ट हो जायेगा। श्रुति मार्ग किस को कहते हैं? श्रुति कहते हैं, 'सुना गया'। समृति मार्ग नहीं, श्रुति मार्ग। वह श्रुति, उद्गीत जो प्रणव की ध्वनि हो रही है, वह मार्ग भ्रष्ट होता है क्योंकि श्रुति सुनी नहीं जा सकती जब तक इन्द्रियों के घाट पर बैठे हो। ऐसे अनुभवी पुरुष की अगर तुम ने निरादरी की है जो श्रुति के जानने वाला है, अरे भई, मैं यह बरदाश्त नहीं कर सकता नहीं तो लोग सारे ही भ्रष्ट हो जायेंगे।

(23) जे सठ गुर सन इरिषा करहीं। रौरव नरक कोटि जुग परहीं।।

कहते हैं,जो मूर्ख लोग गुरु से हसद (ईर्ष्या) करते हैं, वे सौ जन्म तक रौरव नर्क, जो सब से गया गुज़रा है, उसमें वास करते हैं। ब्यान किया जाता है कि उसका सिरा छोटा है, बीच में गंदगी भरी है, उसके

बीच में डाल दिये जाते हैं। इशारे दिये हैं पुराणों में। तो कहते हैं, मूर्ख आदमी अगर कुछ कर नहीं सकता तो ईर्ष्या-द्वेष का तो कोई मतलब नहीं न? देखो, वह (गुरु) तो कुछ नहीं कहता, मगर वह जो नीति के जानने वाला है वह सज़ा देता है। तो काकभुशुंडि को शाप मिला। किसने दिया? गुरु ने नहीं दिया। गुरु तो दयाल पुरुष है, भई। दो किस्म की पावरें मैंने अर्ज़ कीं । एक वह पावर (काल की), जो अधर्मियों को दंड देती है, धर्मियों को उबारती है, जगत को स्थिति में कायम रखती है, वह एक पावर है, वह सज़ा देती है। जो दूसरी किस्म का इज़हार रखते हैं, वे संतजन होते हैं, वे तो प्रभु से जोड़ते हैं। पापी आये, पुन्नी (पुण्यवान) आये, कोई भी आये, चल भाई! प्रभु से जोड़ देते हैं, वे दूसरों को शाप नहीं देते। याद रखो, महात्मा कभी किसी को शाप नहीं देते, समझे। वे हमेशा दया करते हैं। जितना पापी हो कर जाओ, उतनी और दया करते हैं। हमारे हज़ूर (बाबा सावन सिंह जी महाराज) थे। कई बार बड़ी निन्दा करके आना, जब होश आनी कि महाराज दया करो, हमने आप की बड़ी निन्दा की है । कहते, मेरे तक नहीं पहुँची, नाम दे देते थे। यह सन्तों का और जो नीति में रखने वाली ताकत है, उनका आपस में संबंध है। वह (काल की ताकत) सज़ा देती है। वे (सन्त) तो हमेशा ही दया करते हैं।

(24) त्रिजग जोनि पुनि धरहिं सरीरा। अयुत जन्म भरि पावहिं पीरा।।

कहते है, ऐसे पुरुष परिन्दों (पक्षियों) वगैरा की योनियों में जाते हैं और दस हज़ार जन्म तक दुख भोगते हैं। यह किस का बयान है? तुलसीदास जी बयान कर रहे हैं, समझे। अनुभवी पुरुष थे। यही और महात्माओं ने बयान किया। यहाँ तक भी कहा—

गुर निन्दक नारायण होई। ताका मुख न देखो कोई।।

नारायण भी अगर गुरु की निन्दा करे तो उसका मुँह न देखो। तो आप देखेंगे, दो पहलू बयान कर रहे हैं बड़ी सूक्ष्म वृत्ति से। एक स्थिति में कायम करने वाली ताकत **Negetive Power,** एक **Positive Power** है, काल और दयाल। **Positive Power** (दयाल) तो शाप नहीं देती। वह मुआफी ही जानती है। हाफिज़ साहब ने कहा—

आखिर ई अमर शबद मालूम
कि सलतनते दरवेश बवद बेहिसाबी

कहते हैं, आखिर में जाकर हमें यह मालूम हुआ—

कि सलतनते दरवेश बवद बेहिसाबी

कि दरवेशों की सलतनत बख्शिश की है, हिसाब लेना नहीं। जो हिसाब लेने वाली ताकत है, वह उसको संयम में रखने के लिये शाप देती है।

(25) बैठि रहेसि अजगर इव पापी। सर्प होहि खल मल मति ब्यापी।।

कहते हैं, ऐ पापी पुरुष! जा, तू साँप हो जा। तेरी अक्ल में पाप समा गया है, (तुने) गुरु की निरादरी की है, यह शाप दे दिया।

(26) महा बिटप कोटर महुं जाई। रहु अधमाधम अधगति पाई।।

कहते हैं, जा, किसी दरख्त की खोखली जगह जो है, वहाँ बैठा रह और इसी अधोगति में पड़ा रह। बस, यह मैं तुझे शाप देता हूँ। फिर इस पर—

(27)दोहा- हाहाकार कीन्ह गुर दारुन सुनि सिव साप।
कम्पित मोहि बिलोकि अति उर उपजा परिताप।।

कहते हैं, इस बद-दुआ (शाप) को सुन कर गुरु काँप उठा।

आखिर गुरु के दिल में शिष्य का प्यार है, मेरा बच्चा है, कहीं चला न जाये। तो कहने लगे, गुरु ने हाय हाय की। कहते हैं, मुझे काँपता हुआ देख कर बड़ा उसे (गुरु को) रंज (दुख) हुआ। तो क्या कहने लगे, आगे फिर सिलसिला आता है, उसने दुआ की कि तुम इस को शाप न दो, तुम बड़े ऐसे हो, बड़ी महिमा की। फिर आखिर उन्होंने फिर उनके कहने पर काकभुशुंडि की योनि दी। लम्बा सा प्रसंग है। इसके साथ और सात सवाल आते हैं जो कि गरुड़ ने किये हैं काकभुशुंडि से। पीछे राम जी के उसको दर्शन हुए। तो काकभुशुंडि ने जब इस गति को पाया, जन्म दूसरा लिया तो उसमें इस योनि में था मगर दिल में शौक था, यही शौक था कि राम सामने दर्शन दें। राम-राम, लोग बहुत सारे कहते हैं— वह रम रहा है। अरे भई, रमे रहने से भक्त की तसल्ली नहीं होती। वह यह चाहता है कि वह सामने आकर बैठे। तो राम के दर्शनों को पाया आखिर, तो फिर उसकी गति हुई।

+++